

What are the 5 rules that are to be followed before going to Upashray

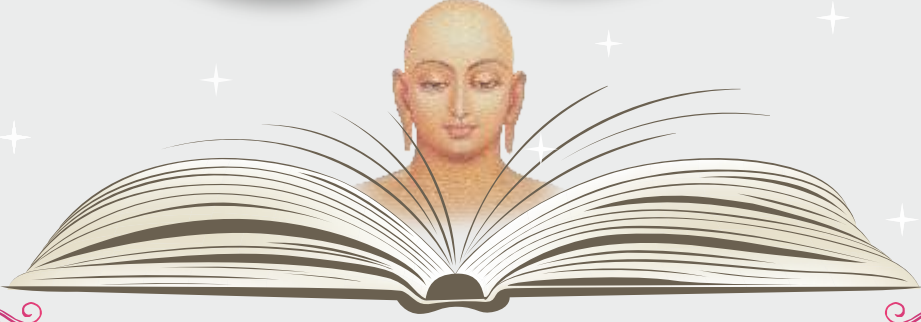


श्रावक के

5

अभिगम

Parmatma Says:

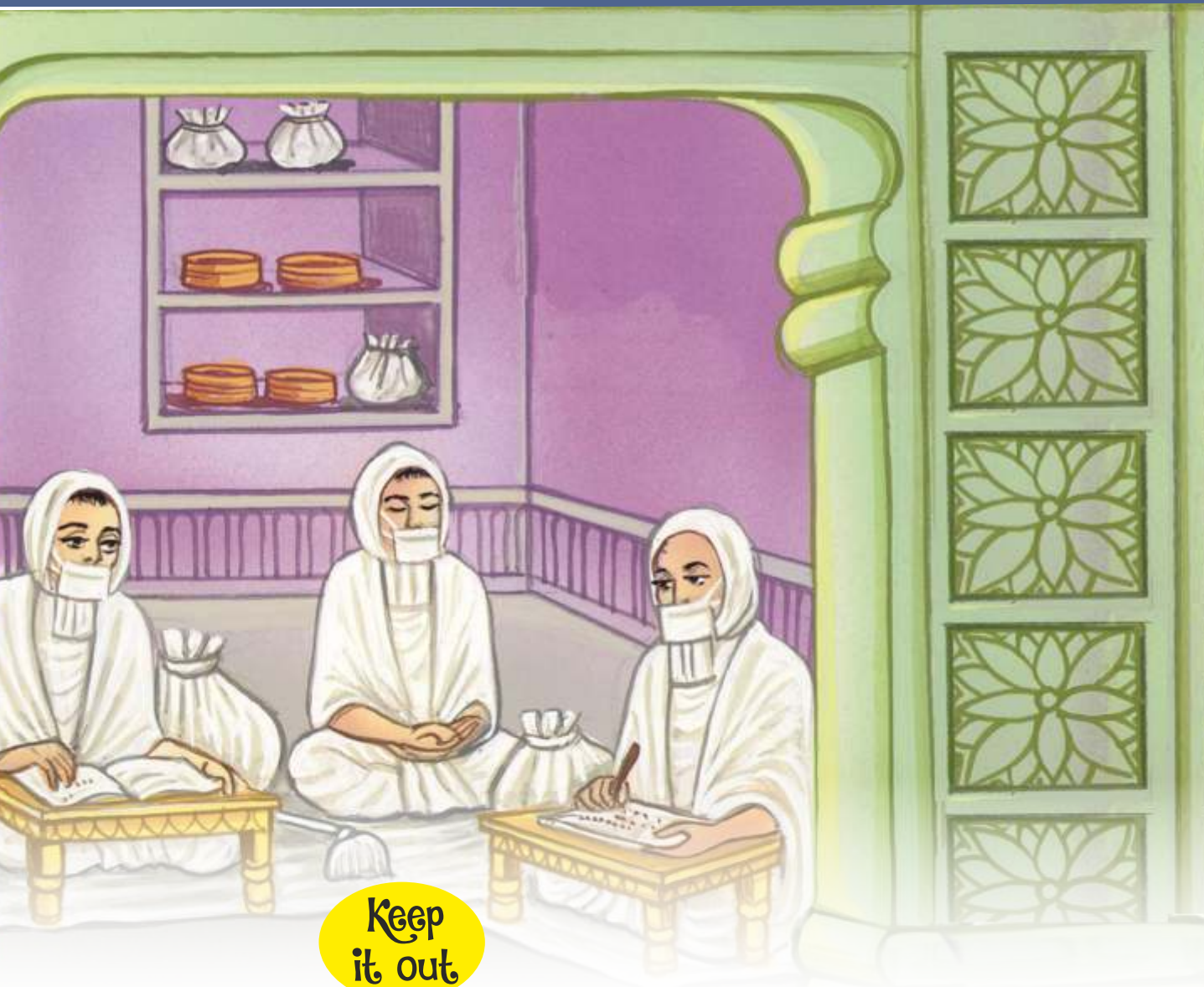


भगवंते पंचिवहेणं अभिगमेणं अभिगच्छंति,
तं जहा - सिचताणं दव्वाणं
विउसरण्याए, अचित्ताणं दव्वाणं विउसरण्याए,
एगसाडिणं उत्तरासंग - करणेणं,
चक्खुप्फासं अंजलिप्पग्गहेणं, मणसो एगतीकरणेणं;
जेणेव थेरा भगवंतो
तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छिता तिक्खुत्तो आयाहिण -
पयाहिणं करेति,
करिता जाव तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासंति ।

A Shravak always follows 5 Abhigam whenever he visits an
Upashray for Sadhu-Sadhvi's darshan and avoids any disrespect



1. Sachet no tyag - सचेत का त्याग



Keep
it out

To abstain from carrying Sachet (Living) items:

Bags containing fruits and vegetables should be kept outside as they are living things. They bear the pain of birth and death every moment thus spreading negative energy.

सब्जी - भाजी की थैली बाहर रखना:

क्योंकि उसमें जीव होते हैं जो हर पल तड़प तड़प कर मरते रहते हैं, इसलिए उनकी वेदना के वाईब्रेशन उपाश्रय के पवित्र वातावरण को खराब करते हैं।



2. Achet no vivek - अचेत का विवेक



Thoughtfulness about Achet(Non - Living) items:

Keep away from the things which may distract our mind. Do not use comb, avoid making noise with the stick, avoid carrying plastic bags which make noise, avoid making noise while moving the chair, wear decent clothes. If Sadhu - Sadhvi are meditating or busy in something else, then do not insist on recitation of "Manglik" by them.



Avoid
them

जिसमें हमारा मन भटकने लगे ऐसी वस्तु का विवेक रखना:

कंगी को सिर पर नहीं घुमाना, कपड़ें योग्य होना, लकड़ी से ठकठक की आवाज न करना, साधु-साध्वी ध्यान या किसी अन्य कार्य में लित हो तब मांगलिक का आग्रह न रखना, खडखड आवाज करे वैसी थैली use नहीं करना। कुर्सी का आवाज नहीं करना।



3. Uttarasang - उत्तरासन



Use either

Uttarasan:

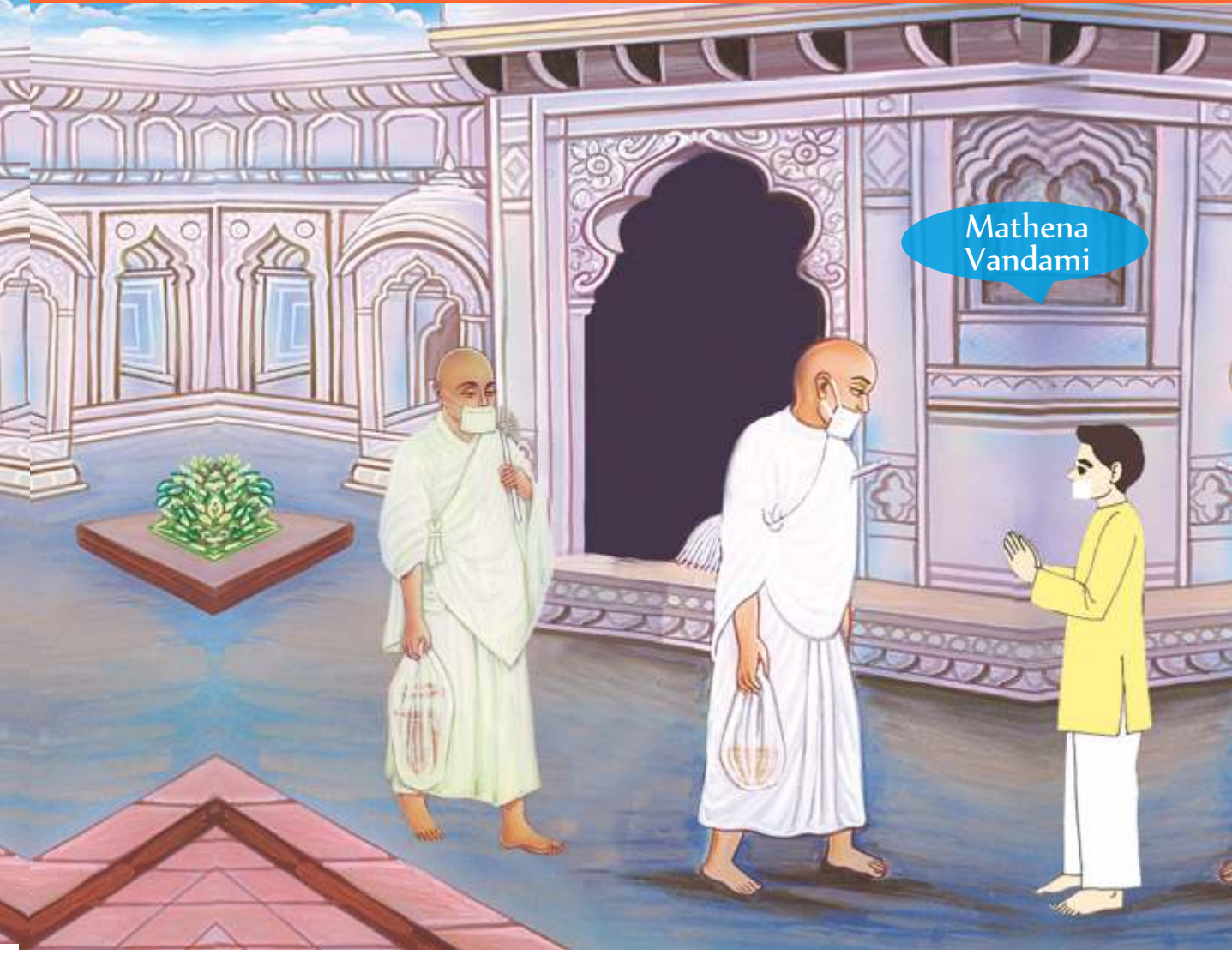
Uttarasan means Muhapatti. To give abhaydaan to Vaayukaay jiv we should wear Muhapatti. To wear a Muhapatti or use a hand kerchief while talking.

उत्तरासन:

उत्तरासन अर्थात् मुहपत्ति। वायुकाय की रक्षा हेतु मुहपत्ति पहननी चाहिए। मुहपत्ति नहीं तो रुमाल या अंत में मुँह के आगे हाथ रख कर बोलना चाहिए।



4. Anjalikaran - अंजलीकरण



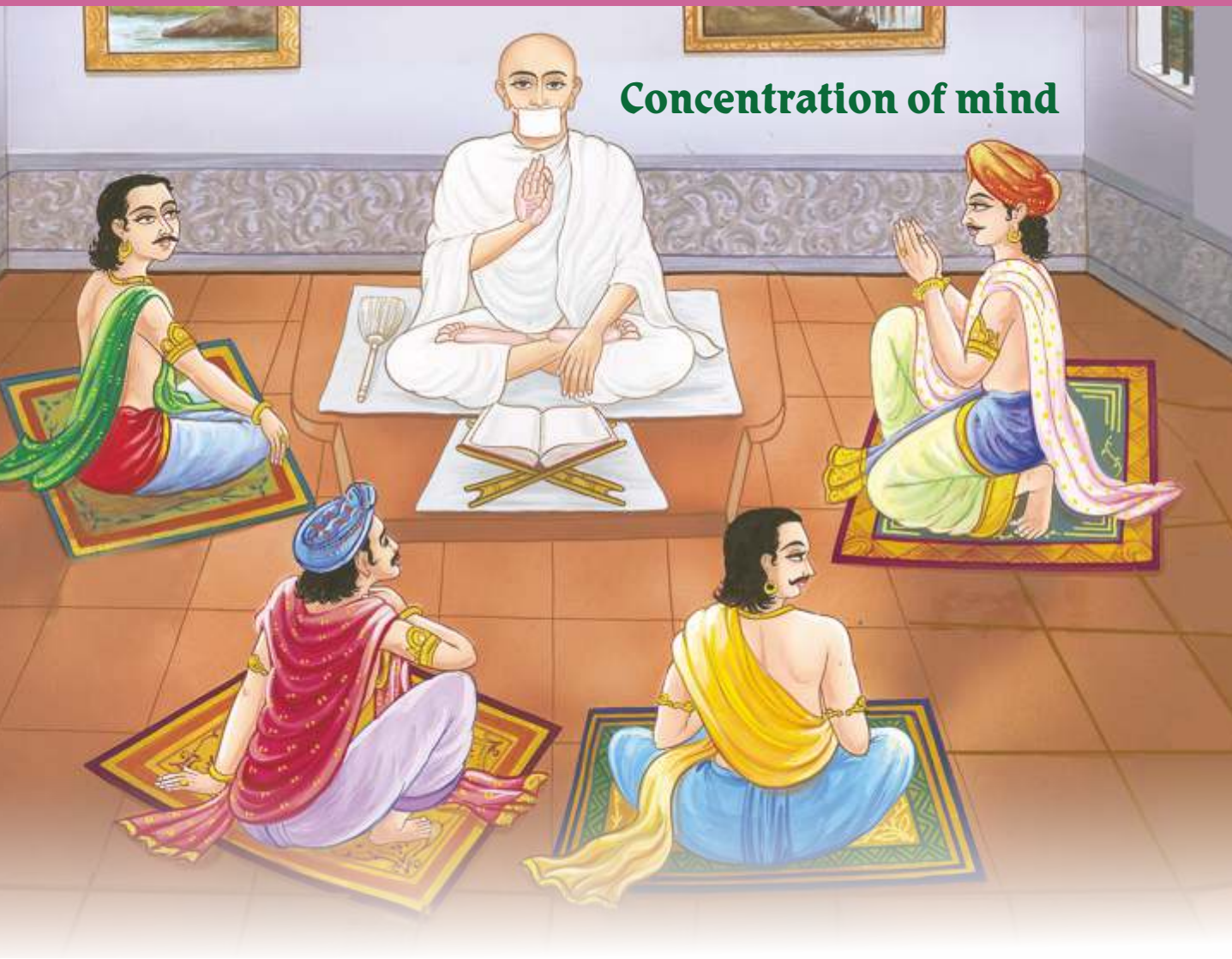
Anjalikaran:

To say Mathenam Vandami, to join hands as soon as you see Pujya Sadhu-Sadhvi and show ahobhaav is Anjalikaran.

अंजलीकरण

संत-सतिजी को देखकर हाथ जोड़ना, अहोभाव प्रगट करना, मत्थएण वंदामि कहना वह अंजलीकरण है।

5. Mann ni ekagrata - मन की एकाग्रता

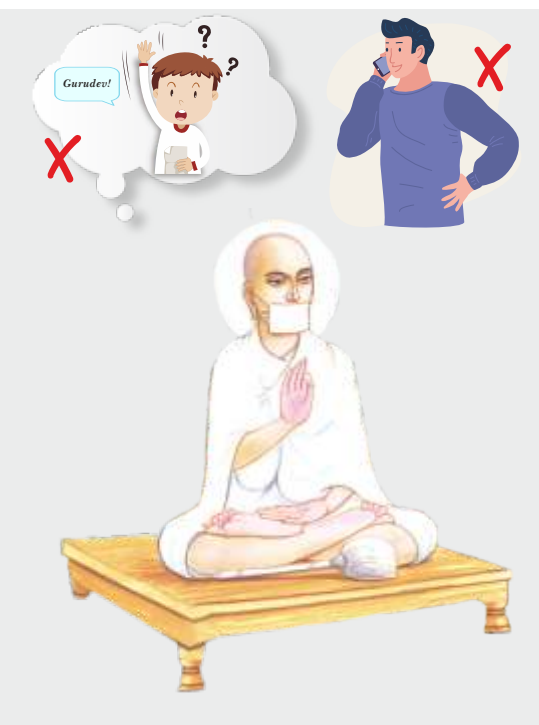


Mann ni ekagrata

गुरु या महासतीजी के सिवा दुसरी तरफ ध्यान होने से अशुभ कर्म का बंध होता है। कभी गुरु किसी अन्य को बोध वचन दे रहे हो तब भी हमारा ध्यान गुरु पर ही केंद्रीत होना चाहिए और हमें उनके पोजीटिव वाइब्रेशन को ग्रहण करना चाहिए-जो हमारी ओरा को शुद्ध बनाते हैं।

मन की एकाग्रता

We tend to bind karmas by wandering our mind in worldly things in presence of Sadhu-Sadhvi. Our Guru might be giving Bodh to somebody else at that time, but we should remain connected with his positive vibrations, which in turn will purify our aura.



Would you like to watch a skit on
"5 ABHIGAM"?

Yes, you can play it in your mobile.

Please click on the 
given below to play the game



TO PLAY
CLICK
HERE

